विषय-सूची

	अध्याय :	पृष्ठ संख्या :
1.	बिहार के एक गाँव की कहानी	1 - 21
2.	मानव एक संसाधन	22-48
3.	गरीबी	49-74
4.	बेकारी	75-96
5.	कृषि, खाद्यान्न सुरक्षा एवं गुणवत्ता	97-119
6.	कृषक मजदूर	120-137

© BSTBPC Not to be Published

संरक्षण

- **श्री हसन वारिस,** निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना
- **श्री रघुवंश कुमार,** निदेशक, (शैक्षणिक) बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना
- **डॉ0 सैयद अब्दुल मुईन,** विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
- **श्री राम तवक्या तिवारी,** विभागाध्यक्ष, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

- **डॉ0 विनय कुमार सिंह** व्याख्याता, अर्थशास्त्र विभाग, एस.एम.डी. कॉलेज, पुनपुन, पटना (मगध विश्वविद्यालय)
- **श्री प्रवीण कुमार** व्याख्याता, अर्थशास्त्र विभाग, एस. यू. कॉलेज, हिलसा, (मगध विश्वविद्यालय)
- **श्रीमति विभा कुमारी** उच्चतर माध्यमिक शिक्षिका, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजेन्द्र नगर, पटना
- **सुश्री प्रीति कुमारी** उच्चतर माध्यमिक शिक्षिका, बलदेव इण्टर विद्यालय, दानापुर कैन्ट, पटना
- **श्री आशीष कुमार** माध्यमिक शिक्षक, राजकीयकृत उच्च विद्यालय, बीर ओईयारा, पटना

© BSTBPC Not to be Published

अकादमिक सहयोग

- **प्रोफेसर (डॉ0) घनश्याम नारायण सिंह,** पूर्व प्रोफेसर, स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया एवं अवैतनिक कार्यकारी निदेशक, नेशनल इन्स्टीच्यूट फॉर रीसर्च ऑन अनआर्गनाइज्ड सेक्टर (NIRUS), मुम्बई ।

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम (2008) के आधार पर तैयार की गयी है। नवीन पाठ्यक्रम (New Syllabus) का मुख्य उद्देश्य प्राप्त ज्ञान को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़कर देश तथा अपने राज्य की आर्थिक समस्याओं के समाधान में विद्यार्थियों की रुचि विकसित करना है।

इस पुस्तक के माध्यम से कक्षा–9 के विद्यार्थियों की बोध–शक्ति एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सरल, बोधगम्य तथा स्पष्ट शब्दों में बिहार तथा भारतीय अर्थव्यवस्था की जानकारी देने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में उपलब्ध आँकड़ों की सहायता से विभिन्न आर्थिक तथ्यों की व्याख्या की गयी है लेकिन इस बात को सदा ध्यान में रखा गया है कि अनावश्यक आँकड़ों में उलझकर विद्यार्थी इस विषय में अपनी रुचि खो न दे। बिहार तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के अध्ययन को प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए रोचक एवं लाभदायक बनाना ही इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है।

© BSTBPC Not to be Published

इस पुस्तक को रोचक पूर्ण तथा सरल बनाया गया है। विद्यार्थियों की सुविधा एवं विषय की तैयारी के लिए प्रत्येक अध्याय के अंत में परीक्षा संबंधी मानक प्रश्न दिए गए हैं।

इस पुस्तक के अंतिम अध्याय में अपने बिहार का सपूत तथा मॉरिशस के राष्ट्रपिता सर शिवसागर राम गुलाम तथा उनके पिता मोहित राम गुलाम के बारे में जिक्र किया गया है जो इस पुस्तक की लोकप्रियता को बढ़ाता है।

इस पुस्तक के लेखन तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए डॉ० विनय कुमार सिंह, व्याख्याता, अर्थशास्त्र विभाग, एस० एम० डी० कॉलेज, पुनपुन, पटना, डॉ० प्रवीण कुमार, व्याख्याता, अर्थशास्त्र विभाग, एस० यू० कॉलेज, हिलसा, श्रीमति विभा कुमारी, शिक्षिका, उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजेन्द्र नगर,

पटना, सुश्री प्रीति कुमारी, शिक्षिका, बलदेव इण्टर विद्यालय, दानापुर कैन्ट, पटना तथा श्री आशीष कुमार, शिक्षक, राजकीयकृत उच्च विद्यालय, बीर ओईयारा, पटना के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं। इन सबों ने गहरी सूझबूझ, अथक् परिश्रम और भावनात्मक लगाव के साथ इस कार्य को तत्परतापूर्वक संपन्न किया। डॉ० घनश्याम नारायण सिंह, पूर्व प्रोफेसर, स्नातकोत्तर, अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया के प्रति भी हम काफी आभारी हैं जिन्होंने अपने रचनात्मक सुझावों तथा परामर्शों से हमें लाभान्वित किया। साथ ही डॉ० सैयद अब्दुल मुईन, विभागाध्यक्ष अध्यापन शिक्षा तथा श्री रामतवक्या तिवारी, विभागाध्यक्ष, मानविकी के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं जिनके सहयोग से यह पुस्तक तैयार हो सकी है। परिषद् के सभी संकाय सदस्यों तथा अन्य सभी कर्मियों के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। श्री विजय कुमार के प्रति भी हम आभार प्रकट करते हैं जिनका सहयोग हमें समय-समय पर मिला है।

पुस्तक आपके हाथों में है। आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं सामान्य पाठकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगी तथा उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पाठकों एवं शिक्षकों द्वारा बतलायी गयी त्रुटियों तथा उनके सुझावों का मैं हार्दिक स्वागत करूँगा।

हसन वारिस

निदेशक (प्रभारी)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

© BSTBPC Not to be Published

विषय-सूची

	अध्याय :	पृष्ठ संख्या :
1.	बिहार के एक गाँव की कहानी	1 - 21
2.	मानव एक संसाधन	22-48
3.	गरीबी	49-74
4.	बेकारी	75-96
5.	कृषि, खाद्यान्न सुरक्षा एवं गुणवत्ता	97-119
6.	कृषक मजदूर	120-137

© BSTBPC Publi

इकाई–1

बिहार के एक गाँव की कहानी

चित्र–1.1

गाँव फतेहपुर

अवलोकन :

इस कहानी का उद्देश्य उत्पादन से सम्बन्धित कुछ मूल विचारों से छात्रों को परिचय कराना है। गाँव फतेहपुर में खेती ही मुख्य क्रिया है जबकि अन्य क्रियाएँ जैसे–पशुपालन, मुर्गी पालन, डेयरी, दुकानदारी, परिवहन आदि सीमित स्तर पर की जाती है। इन उत्पादन क्रियाओं के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिनमें मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधन, मानव निर्मित वस्तुएँ, मानव प्रयास, मुद्रा आदि है। फतेहपुर गाँव की प्रारंभिक कहानी से स्पष्ट होगा कि गाँव में इच्छित वस्तुओं और सेवाओं को उत्पादित करने के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधन किस प्रकार से समायोजित होते हैं।

चित्र–1.2

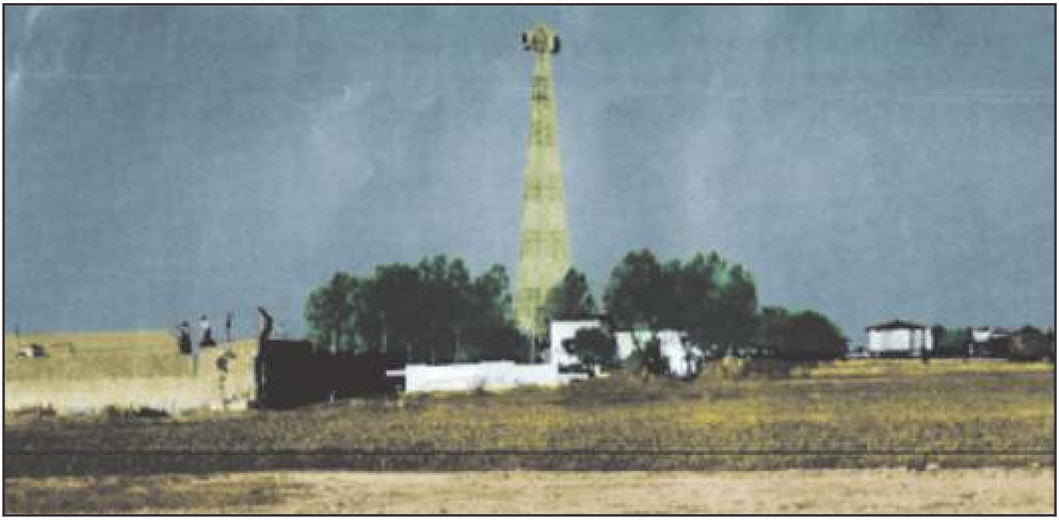

विकास की ओर बढ़ता गाँव

> **फतेहपुर गाँव में श्री फतेहश्वर नारायण सिंह एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, कर्मठ एवं आदर्श व्यक्ति थे। उन्हीं के नाम पर इस गाँव का नाम ''फतेहपुर'' पड़ा।**

फतेहपुर गाँव अपने आस–पड़ोस के गाँवों और कस्बों से भली भाँति जुड़ा हुआ है। इस गाँव के पूरब में पुनपुन नदी है तो पश्चिम में पटना गया मुख्य सड़क मार्ग है। जो पटना से मात्र 9 कि० मी० की दूरी पर सड़क से पूरब की ओर स्थित है। इस सड़क पर प्राय: बैलगाड़ी, मोटर गाड़ी, मोटर साइकिल, जीप, ट्रैक्टर, बस और ट्रक तक देखे जा सकते हैं। इस गाँव में विभिन्न जातियों के लगभग 1500 परिवार रहते हैं। गाँव में अधिकांश लोग भू–स्वामी हैं जिनमें से कुछ बहुत बड़े परिवार के हैं, उनके मकान ईंट और सीमेन्ट के बने हुए हैं। गरीब लोगों की संख्या गाँव की कुल जनसंख्या का एक चौथाई है, जो गाँव के एक कोने में काफी छोटे से घरों में रहते हैं, जिनके मकान मिट्टी और फूस के बने हैं। सरकार द्वारा इंदिरा आवास योजना के तहत गरीब परिवार के लोगों को पक्के मकान की व्यवस्था की गई है। राजधानी पटना से नजदीक होने के कारण ही घरों में पर्याप्त मात्रा में बिजली उपलब्ध है। हाल ही के वर्षों में सरकार द्वारा बिजली उत्पादन एवं रख–रखाव के लिए गाँव में ही पावर ग्रीड की स्थापना की गई है। खेती में भी प्राय: सभी नलकूप बिजली से ही चलते हैं और इसका उपयोग विभिन्न प्रकार के छोटे कार्यों के लिए भी किया जाता है। गाँव में छह प्राथमिक विद्यालय, एक मध्य विद्यालय, एक हाई

© BSTBPC Not to be Published

स्कूल एवं साथ ही एक डिग्री कॉलेज भी हैं। गाँव में दो राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और एक निजी हॉस्पीटल भी हैं, जहाँ रोगियों का उपचार किया जाता है। डाकघर की सुविधा होने के साथ ही इस गाँव में एक आँगनबाड़ी केन्द्र भी है जहाँ महिलाओं की संगोष्ठी अक्सर देखी जाती है। कला मंच (स्टेज) सामुदायिक भवन, सामुदायिक शौचालय एवं प्रसिद्ध काली मंदिर आधुनिक आकर्षण का केन्द्र भी उपलब्ध है।

उपयुक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि फतेहपुर गाँव अन्य गाँव, कस्बों की तुलना में काफी आधुनिक एवं उन्नत है। यहाँ सड़क, परिवहन के साधनों, बिजली, सिंचाई, विद्यालयों, कॉलेज और स्वास्थ्य केन्द्रों का पर्याप्त विकसित तंत्र है। इन सुविधाओं की तुलना आप अपने निकट के गाँव में उपलब्ध सुविधाओं से करें :–

चित्र–1.3

उत्पादित खाद्यान्न को विक्रय हेतु ले जाता कृषक

हम जानते हैं कि उत्पादन के द्वारा ही समाज में वस्तुओं एवं सेवाओं का सृजन होता है जो हमारी आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है। गाँव-कस्बा-शहर-राज्य-देश-विश्व की ओर हम देखते हैं कि लोग अपने जीविकोपार्जन के लिए किसी न किसी प्रकार के कार्यों में संलग्न होते हैं। खेतिहर किसान, खेत-कारखानों में काम करनेवाले मजदूर, कारीगर, शिक्षक, डाक्टर, इंजीनियर, दुकानदार आदि समाज के विभिन्न वर्ग हैं, जो किसी न किसी कार्य में लगे हुए हैं।

फतेहपुर की कहानी हमें किसी भी गाँव में विभिन्न प्रकार की उत्पादन संबंधी गतिविधियों के बारे में बताएगी। बिहार के गाँवों में खेती ही उत्पादन की प्रमुख गतिविधि है। अन्य उत्पादक गतिविधियों में जिन्हें गैर कृषि क्रियाएँ कहा गया है, जिनमें लघु विनिर्माण, परिवहन, पशुपालन, दुकानदारी, डेयरी आदि शामिल हैं। खेती में आई नयी तकनीक एवं क्रांति के बाद भी गाँव के लोगों में आज भी कृषि के परंपरागत तरीके अधिक लोकप्रिय हैं।

उत्पादन (PRODUCTION) :

अर्थशास्त्र में उत्पादन का अर्थ उपयोगिता का सृजन करना है।

उत्पादन के साधन को जानने से पूर्व हम उत्पादन के बारे में समझ स्थापित करने का प्रयास करेंगे।

© BSTBPC
Not to be Published

यह अर्थशास्त्र के अध्ययन का मुख्य भाग है। उत्पादन के द्वारा ही समाज में वस्तुओं एवं सेवाओं का सृजन होता है जो हमारी आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है। परन्तु यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उत्पादन का अर्थ किसी भौतिक वस्तु का निर्माण करना नहीं है बल्कि मनुष्य अपने आर्थिक प्रयास से प्रकृति द्वारा उपलब्ध किए गए पदार्थों के रूप, स्थान या अधिकार में परिवर्तन लाकर उन्हें अधिक उपयोगी बनाता है। आर्थिक दृष्टि से हम इसे ही **उत्पादन** कहते हैं। उदाहरण के लिए एक बढ़ई जब लकड़ी को काट-छाँटकर उससे टेबुल या कुर्सी बनाता है तो उसे उत्पादन कहा जाएगा क्योंकि इससे लकड़ी की उपयोगिता बढ़ जाती है। इस प्रकार उत्पादन का अर्थ किसी वस्तु या पदार्थ का नहीं बल्कि उपयोगिता का सृजन करना है। अर्थशास्त्र के इस भाग में उत्पादन के साधनों (भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन और उद्यम) एवं उत्पादन के तरीकों तथा सिद्धान्तों का अध्ययन किया गया है।

उत्पादन के साधन (Factors of Production) :

वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता पड़ती है, जिन्हें उत्पादन के साधन कहते हैं। अर्थात् जो उत्पादन की क्रिया में सहयोग देता है वह

उत्पादन का साधन है। उदाहरण के लिए, अन्न उपजाने के लिए भूमि, हल-बैल, बीज, मजदूर, सिंचाई, दवाई, इत्यादि की आवश्यकता पड़ती है। उसी तरह कारखानों में उत्पादन करने के लिए भूमि, मकान, मशीन, मजदूर, पूँजी, संगठनकर्त्ता, बाजार इत्यादि का सहयोग आवश्यक होता है। इस प्रकार उत्पादन के लिए विभिन्न साधनों की आवश्यकता पड़ती है।

उत्पादन के निम्नलिखित पाँच साधन हैं।

1. भूमि (Land)
2. श्रम (Labour)
3. पूँजी (Capital)
4. व्यवस्था या संगठन (Organisation),
5. उद्यम या साहस (Enterprise)।

अब हम इनकी व्याख्या अलग-अलग करेंगे।

उत्पादन के साधन

1. भूमि
2. श्रम
3. पूँजी
4. व्यवस्था या संगठन
5. उद्यम या साहस

(1) भूमि (LAND) : उत्पादन के लिए सर्वप्रथम भूमि की आवश्यकता पड़ती है। साधारण अर्थ में भूमि से हमारा मतलब जमीन तथा उसकी ऊपरी सतह से है। लेकिन अर्थशास्त्र में भूमि से मतलब प्रकृति प्रदत्त सारे मुफ्त उपहारों से है। इस प्रकार भूमि के अन्तर्गत भूमि की ऊपरी सतह के अतिरिक्त पहाड़, जंगल, नदी, समुद्र, हवा, धूप, खनिज आदि सम्मिलित है। अर्थात् प्रकृति द्वारा मुफ्त में दी गयी चीजों को भूमि कहा जाता है। प्रकृति के इन मुफ्त उपहारों से सर्वदा उत्पादन में सहायता मिलती है। भूमि उत्पादन का एक निष्क्रिय साधन (Passive Factor) है लेकिन फिर भी इसे उत्पादन का मौलिक साधन माना जाता है।

© BSTBPC Not to be Published

प्रो० मार्शल (Marshall) के अनुसार-"भूमि का मतलब केवल जमीन की ऊपरी सतह से ही नहीं वरन् उन सभी पदार्थों तथा शक्तियों से है, जिन्हें प्रकृति ने मानव की सहायता के लिए भूमि, जल, वायु, प्रकाश तथा गर्मी के रूप में निःशुल्क प्रदान किया है।"

भूमि एक प्राकृतिक संसाधन है, अतः इसका सावधानीपूर्वक प्रयोग करने की जरूरत है। वैज्ञानिक रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि खेती की आधुनिक विधियों ने प्राकृतिक संसाधन का अत्यधिक प्रयोग किया है। अनेक क्षेत्रों में हरित क्रांति के कारण उर्वरकों के अधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो गई है।

भौतिक साधनों के निर्माण में प्रकृति का अत्यधिक दोहन होता है जैसे-एक मकान के निर्माण के लिए अनेक वृक्षों को काटना पड़ता है।

1.1 भूमि स्थिर है (Land is Static) :

फतेहपुर में खेती उत्पादन की प्रमुख क्रिया है। यहाँ काम करने वालों में 75 प्रतिशत लोग अपनी जीविका के लिए खेती पर निर्भर हैं। वे किसान अथवा कृषि श्रमिक हो सकते हैं। इनलोगों का हित खेतों में उत्पादन प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। खेती में प्रयुक्त भूमि–क्षेत्र वस्तुतः स्थिर होता है। फतेहपुर गाँव में 1960 से आज तक जुताई के अंतर्गत भूमि–क्षेत्र में कोई विस्तार नहीं हुआ है। प्रारम्भ में इस गाँव की कुछ बंजर भूमि को कृषि योग्य भूमि में बदल दिया गया था। तब से अब तक इस गाँव में कृषि–योग्य भूमि क्षेत्र में कोई विस्तार नहीं हो सका है।

भूमि मापने की मानक इकाई हेक्टेयर है, यद्यपि गाँवों में भूमि का माप एकड़, बीघा, कट्ठा, धुर आदि जैसे क्षेत्रीय इकाइयों में भी किया जाता है। एक हेक्टेयर, 100 मीटर की भुजा वाले वर्ग के क्षेत्रफल के बराबर होता है। क्या आप एक हेक्टेयर के मैदान के क्षेत्र की तुलना अपने स्कूल के मैदान से कर सकते हैं?

बिहार में लगभग अधिकांश भूमि पर खेती की जाती है। कोई भूमि बेकार नहीं छोड़ी जाती है। जुलाई से अक्टूबर बरसात के मौसम (**खरीफ फसल**) में किसान मुख्यतः धान एवं हरी सब्जियाँ उगाते हैं। इसके बाद नवम्बर से फरवरी जाड़े के मौसम (**रबी फसल**) में प्रायः गेहूँ, दलहन, तिलहन एवं आलू की खेती होती है। उत्पादित अनाजों में से किसान अपने खाने के लिए रखकर शेष खाद्यान्न फसलों को अपने पास के मंडी में बेच देते हैं। भूमि के एक भाग में गन्ने की खेती भी की जाती है जिसकी वर्ष में एक बार कटाई होती है। गन्ने अपने कच्चे रूप में या गुड़ के रूप में व्यापारियों को बेचा जाता है।

© BSTBPC Not to be Published

भारत में सभी गाँवों में उच्च स्तर की सिंचाई व्यवस्था नहीं है। नदीय मैदानों के अतिरिक्त हमारे देश में तटीय क्षेत्रों में अच्छी सिंचाई होती है। इसके विपरीत पठारी क्षेत्रों जैसे, दक्षिणी पठार में सिंचाई कम होती है। देश में आज भी कुल कृषि क्षेत्र के 40 प्रतिशत से भी कम क्षेत्र में ही सिंचाई होती है। शेष क्षेत्रों में खेती मुख्यतः वर्षा पर निर्भर है ।

1.2 बहुविध फसल प्रणाली (Multiple Cropping System) :

एक वर्ष में किसी भूमि पर एक से ज्यादा फसल पैदा करने को बहुविध फसल प्रणाली कहते हैं। यह भूमि के किसी एक टुकड़े में उपज बढ़ाने की सबसे सामान्य प्रणाली है। फतेहपुर के प्रायः सभी किसान कम से कम दो मुख्य फसलों का उत्पादन करते हैं। कई किसान तो पिछले कई वर्षों से तीसरी फसल के रूप में आलू एवं अन्य हरी सब्जियों का भी उत्पादन करने लगे हैं।

चित्र-1.4

विभिन्न प्रकार की हरी-भरी सब्जियाँ

© BSTBPC Not to be Published

1.3 किसानों में भूमि किस प्रकार वितरित है (Distribution of Land) :

आपने यह जान लिया होगा कि खेती के लिए भूमि कितनी महत्वपूर्ण है। दुर्भाग्यवश खेती के काम में लगे सभी लोगों के पास खेती के लिए पर्याप्त भूमि नहीं है।

1960-70 के दशक में मुरारी नामक किसान के पास 3 हेक्टेयर भूमि थी जिनमें अधिकतर असिंचित भूमि थी। मुरारी अपने तीन पुत्रों की मदद से इस भूमि पर खेती करता था। यद्यपि वे बहुत आराम से नहीं रह रहे थे लेकिन परिवार अपनी दो भैंसों के दूध बेचकर होने वाली कुछ अतिरिक्त आय के द्वारा अपना गुजारा कर रहा था। मुरारी की मृत्यु के पश्चात् यह

भूमि उसके तीनों पुत्रों के बीच बँट गई। प्रत्येक के पास 1 हेक्टेयर भूमि का टुकड़ा था। परन्तु बेहतर सिंचाई व्यवस्था और खेती की आधुनिक विधियों के बावजूद भी मुरारी के बेटे अपनी 1 हेक्टेयर जमीन पर खेती कर ठीक ढंग से गुजारा नहीं कर पा रहे हैं। वर्ष के कुछ महीनों में उन्हें अतिरिक्त कार्य करके अपना भरण पोषण करना पड़ता है। इस गाँव में कुछ किसानों के पास अधिक भूमि हैं किन्तु बढ़ती जनसंख्या तथा बँटते परिवार के कारण भूमि का वितरण असमान है अर्थात् कुछ के पास अधिक और बहुसंख्यक के पास कम भूमि है। इस गाँव में भूमि का असमान वितरण है।

चित्र-1.5

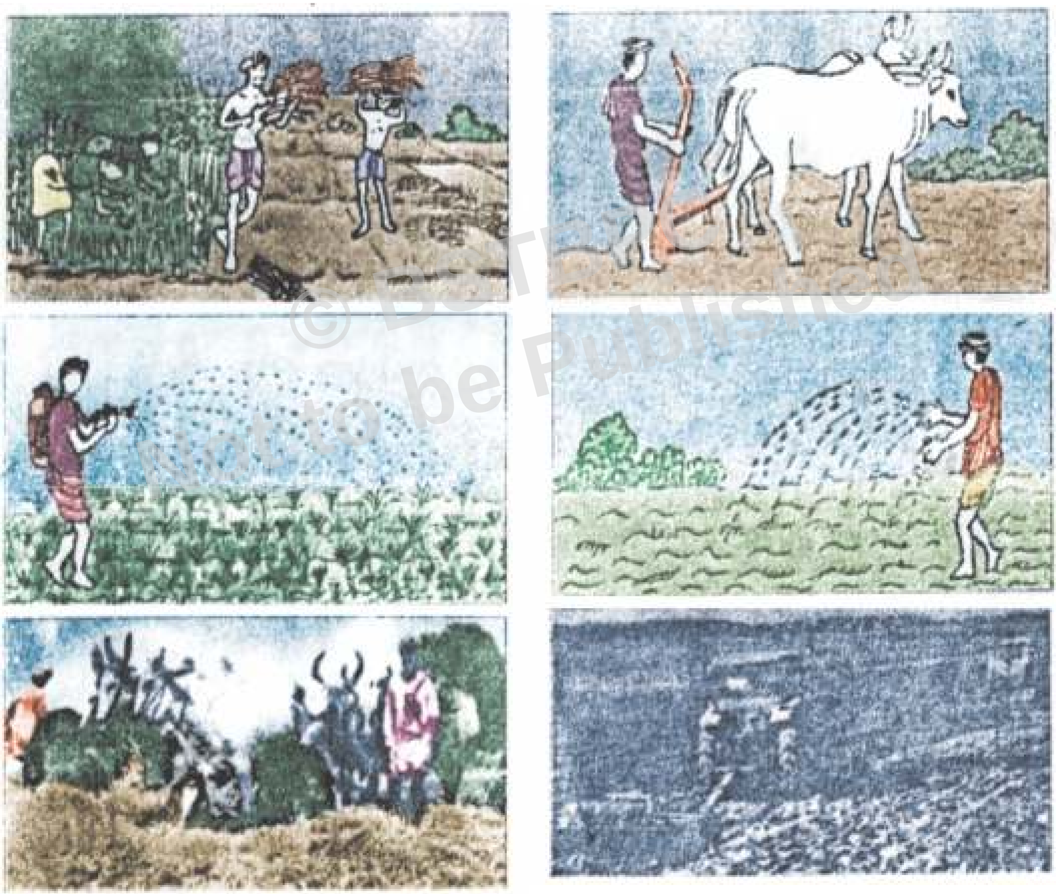

खेतों में कार्य : गेहूँ की फसल-कटाई, बीज बोना, कीटनाशकों का छिड़काव तथा आधुनिक एवं परंपरागत विधियों से फसलों की जुताई

(2) श्रम (LABOUR) :

श्रम उत्पादन का दूसरा महत्वपूर्ण साधन है। श्रम के बिना किसी प्रकार का उत्पादन सम्भव नहीं है। अध्ययन की दृष्टि से श्रम दो प्रकार का होता है (i) **शारीरिक श्रम (Physical Labour)** (ii) **मानसिक श्रम (Mental Labour)**। उत्पादन में शारीरिक तथा मानसिक दोनों श्रम का उपयोग किया जाता है। श्रम को उत्पादन का **सक्रिय साधन (Active Factor)** कहा जाता है लेकिन उत्पादन के साधन के रूप में शारीरिक अथवा मानसिक श्रम आर्थिक उद्देश्य से किये जाने चाहिए। अर्थात् भूमि के अतिरिक्त श्रम उत्पादन का दूसरा आवश्यक साधन है। उत्पादन के लिए बहुत ज्यादा परिश्रम की आवश्यकता होती है। खेती के लिए छोटे किसान अपने परिवारों के साथ अपने खेतों में स्वयं काम करते हैं। इस तरह वे खेती के लिए आवश्यक श्रम की व्यवस्था स्वयं ही करते हैं। मझोले और बड़े किसान अपने खेतों में काम करने के लिए दूसरे श्रमिकों को मजदूरी पर लाते हैं।

मजदूरी (Wages) : राष्ट्रीय आय का वह हिस्सा जो श्रमिकों को उनके परिश्रम के लिए दिया जाता है, अर्थात् श्रम के प्रयोग के लिए दी गई कीमत (Price) मजदूरी कहलाती है। श्रम शारीरिक अथवा मानसिक हो सकती है।

© BSTBPC Not to be Published

प्राय: खेतों में काम करने वाले श्रमिक या तो भूमिहीन परिवारों के होते हैं या सीमान्त किसान के होते हैं। शायद ही किसी श्रमिक के पास अपनी भूमि होती है। प्राय: वे दूसरे के खेतों में कार्य कर अपने परिवार का जीवकोपार्जन करते हैं। खेतों में काम करने वाले श्रमिकों का उगाई गई फसल पर कोई अधिकार नहीं होता, जैसा किसानों का होता है बल्कि उन्हें उन किसानों द्वारा मजदूरी मिलती है, जिनके लिए वे काम करते हैं। मजदूरी नकद या वस्तु जैसे अनाज के रूप में हो सकती है।

प्रो0 मार्शल (Marshall) के अनुसार–''श्रम का मतलब मनुष्य के आर्थिक कार्य से है चाहे वह हाथ से किया जाय या मस्तिष्क से।''

आरेख : 1.1

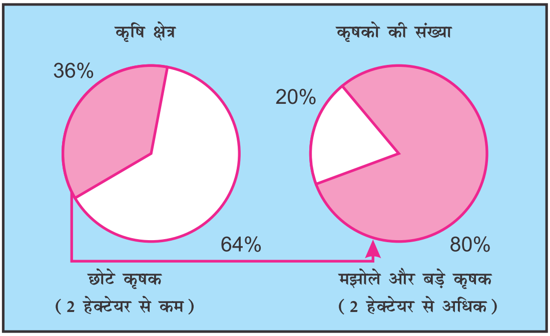

(3) पूँजी (CAPITAL) :

साधारण बोलचाल की भाषा में पूँजी का मतलब रुपये–पैसे से लगाया जाता है। लेकिन अर्थशास्त्र में पूँजी शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया जाता है। अर्थशास्त्र में पूँजी का मतलब मनुष्य द्वारा उत्पादित धन के उस भाग से है, जिसका प्रयोग अधिक धन के उत्पादन के लिये किया जाता है। इस प्रकार बीज, कच्चा माल, मशीन, कारखाने, मकान आदि पूँजी के अन्तर्गत आते हैं। द्रव्य के केवल उसी भाग को पूँजी में सम्मिलित किया जाता है जिसका प्रयोग पुनः उत्पादन के लिए किया जाता है।

दूसरे शब्दों में धन का वह अंश जिसका प्रयोग पुनः उत्पादन के लिए किया जाता है, उसे **पूँजी** कहते हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि पूँजी उत्पादन का एक प्रमुख साधन है, जिसके अंतर्गत मुद्रा अथवा वस्तुओं का भंडार होता है जिसका प्रयोग उत्पादन के लिए किया जाता है।

प्रो0 मार्शल (Marshall) के अनुसार– "प्रकृति की निःशुल्क देन को छोड़कर वह सब सम्पत्ति जिससे आय प्राप्त होती है, पूँजी कहलाती है।"

उत्पादन के साधन में पूँजी की अपनी एक अहम् भूमिका है बिना पूँजी के किसी भी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन कर पाना संभव नहीं है। हम पहले ही देख चुके हैं कि खेती के आधुनिक तरीकों के लिए बहुत अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। अतः अब किसानों को पहले की अपेक्षा ज्यादा पैसा चाहिए।

© BSTBPC Not to be Published

3.1 पूँजी की व्यवस्था–अधिसंख्यक छोटे किसानों को पूँजी की व्यवस्था करने के लिए पैसा उधार लेना पड़ता है। वे बड़े किसानों से या गाँव के साहूकारों अथवा खेती के लिए विभिन्न सामानों की पूर्ति करने वाले व्यापारियों से कर्ज लेते हैं। ऐसे कर्जों पर ब्याज की दर बहुत ऊँची होती है। कर्ज चुकाने के लिए उन्हें बहुत कष्ट सहने पड़ते हैं। छोटे किसानों के विपरीत मझोले और बड़े किसानों को खेती से बचत होती है। इस तरह वे खेती या वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करके आवश्यक पूँजी की व्यवस्था कर लेते हैं।

सविता की कहानी

सविता एक लघु कृषक है। वह अपनी एक हेक्टेयर जमीन पर गेहूँ पैदा करने की योजना बनाती है। बीज और कीटनाशकों के अतिरिक्त उसे सिंचाई के लिए पानी और खेती के औजारों की मरम्मत करवाने के लिए नकद पैसों की जरूरत है। उसका अनुमान है कि कार्यशील पूँजी के रूप में ही उसे 3000 रु. चाहिए। उसके पास पैसा नहीं है इसलिए वह एक बड़े किसान तेजपाल सिंह से कर्ज लेने का निर्णय लेती है। तेजपाल सिंह सविता को 24 प्रतिशत प्रतिमाह की दर पर चार महीने के लिए कर्ज देने को तैयार हो जाता है, जो ब्याज की एक बहुत ऊँची दर है। सविता को यह भी वचन देना पड़ता है कि वह कटाई के मौसम में उसके खेतों में एक श्रमिक के रूप में 35 रु. प्रतिदिन पर काम करेगी। आप भी कह सकते हैं कि यह मजदूरी बहुत कम है। सविता जानती है कि उसे अपने खेत की कटाई पूरी करने में बहुत मेहनत करनी पड़ेगी और उसके बाद तेजपाल के खेतों में श्रमिक की तरह काम करना होगा। कटाई का समय बहुत व्यस्त होता है। तीन बच्चों की माँ के रूप में उस पर घर के कामों की भी बहुत जिम्मेवारी है। सविता इन कठिन शर्तों को मानने के लिए तैयार हो जाती है क्योंकि उसे मालूम है कि छोटे किसानों को कर्ज मिलना बहुत कठिन है। उसे यह पता नहीं है कि सरकार बैंकों के माध्यम से छोटे किसानों के लिए कर्ज की व्यवस्था की है।

© BSTBPC Not to be Published

(4) संगठन (ORGANISATION) :

भूमि, श्रम एवं पूँजी उत्पादन के साधन हैं लेकिन उत्पादन के लिए आवश्यकता यह है कि उन्हें एकत्रित कर उत्पादन कार्य में लगाया जाए। यह कार्य विशेषकर व्यवस्थापक अथवा संगठनकर्त्ता द्वारा किया जाता है। इस प्रकार व्यवस्था या संगठन उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन है। बड़े पैमाने पर उत्पादन कार्य में व्यवस्था या संगठन का महत्व और भी बढ़ जाता है। कम पूँजी रहने पर उत्पादन के साधन को और ही व्यवस्थित ढंग से उपयोग करने की जरूरत पड़ती है ताकि सीमित उत्पादन के साधन का समुचित प्रयोग हो सके। जितना ही अच्छा उद्यमी होगा उतना ही व्यवस्था या संगठन चुस्त होगा। यही कारण है कि **संगठन उत्पादन प्रक्रिया का एक सक्रिय साधन माना गया है।**

अत: हम कह सकते हैं कि उत्पादन के विभिन्न साधनों को एकत्रित कर उन्हें उत्पादन में लगाने की क्रिया को व्यवस्था अथवा संगठन कहते हैं और जो व्यक्ति यह कार्य करता है, उसे व्यवस्थापक अथवा संगठनकर्त्ता कहते हैं।

(5) साहस या उद्यमी (ENTERPRISES) :

उत्पादन करने में संगठनकर्त्ता या उत्पादनकर्त्ता का मुख्य उद्देश्य लाभ प्राप्त करना होता है लेकिन विभिन्न कारणों और विशेषकर भविष्य की अनिश्चितताओं के चलते उत्पादन में घाटा भी हो सकता है। अर्थात् उत्पादन कार्य जोखिम से भरा हुआ होता है जो इस जोखिम का वहन करता है उसे ही **उद्यमी** या **साहसी** कहा जाता है। आधुनिक समय में उत्पादन के जोखिम को वहन करने के लिए साहसी की भूमिका बहुत ही बढ़ गई है। यदि उत्पादन के फलस्वरूप साहसी को लगातार घाटा हो तो ऐसी अवस्था में साहसी का साहस टूट जाता है, तत्पश्चात् उत्पादन की पूरी प्रक्रिया ठप हो जाती है। इसलिए साहसी उत्पादन प्रक्रिया के पूर्व ही यह सोच लेता है कि हमें अंतिम क्षण तक उत्पादन को चालू रखना है।

अतः उत्पादन में जोखिम उठाने के कार्य को साहस कहते हैं तथा जो व्यक्ति इस जोखिम को उठाता है उसे साहसी या उद्यमी कहते हैं।

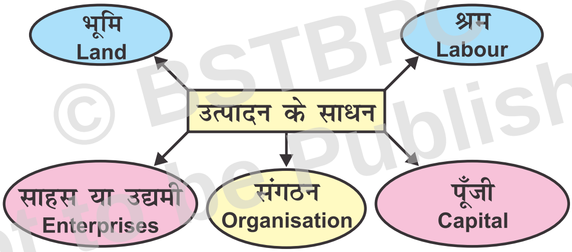

© BSTBPC
Not to be Published

उत्पादन क्या हो (What to Produce) :

यह वास्तव में किसी अर्थव्यवस्था की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या होती है। इसका कारण यह है कि हम किसी एक वस्तु के उत्पादन को घटाकर ही दूसरी वस्तु का उत्पादन कर सकते हैं। उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन से हमारी वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। यह समस्या मुख्यत: साधनों के आवंटन की समस्या होती है। जैसा हमने ऊपर देखा है कि किसी देश के सीमित साधनों का कई प्रकार से प्रयोग हो सकता है। उदाहरण के लिए : एक अर्थव्यवस्था की उपलब्ध भूमि में हम चावल, गेहूँ, मकई आदि खाद्यान्न वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं अथवा गन्ना, जूट, दलहन, तिलहन, कपास इत्यादि कच्चे माल का जिनका उद्योग-धंधों में प्रयोग होता है उनका उत्पादन कर सकते हैं। इस भूमि पर हम कल-कारखानों आदि की भी स्थापना कर सकते हैं। उसी प्रकार किसी देश के लोहा एवं इस्पात का प्रयोग

अस्त्र–शस्त्र के निर्माण में हो सकता है या मशीन और उपकरणों के उत्पादन के लिए अथवा इनका प्रयोग मकान, पुल, मॉल बाजार आदि के लिए किया जा सकता है। अर्थात् स्पष्ट है कि उत्पादन के साधनों का कई प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है।

I. उत्पादन के साधनों की महत्ता (Importance of Factors of Production) :

वास्तव में देखा जाए तो समय एवं आर्थिक विकास के साथ–साथ उत्पादन के विभिन्न साधनों के सापेक्षिक महत्व में अन्तर हुआ है। आदिकाल में मनुष्य जब जंगलों में रहता था तो फल तोड़कर, शिकार करके तथा झरनों का जल पीकर अपना जीवन–यापन कर लेता था। इस सब कार्यों में श्रम की आवश्यकता पड़ती थी, फिर भी श्रम की अपेक्षा भूमि का अधिक महत्व था। लेकिन आबादी बढ़ने के साथ मनुष्य को इन चीजों को प्राप्त करने के लिए अधिक मेहनत की आवश्यकता पड़ी तथा वे स्वयं फल तथा अनाजों का उत्पादन करने लगे। इस प्रकार धीरे–धीरे श्रम का महत्व बढ़ता गया। खेती, कल–कारखाने इत्यादि कार्य करने तथा उत्पादन को बढ़ाने के लिए मनुष्य को पूँजी की भी आवश्यकता हुई। आज सभ्यता एवं आर्थिक विकास के साथ बड़े पैमाने पर उत्पादन कार्य होता है तथा पूँजी उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन हो गया है। लेकिन बड़े पैमाने पर उत्पादन के इस युग में उत्पादन के विभिन्न साधनों जैसे–भूमि, श्रम, पूँजी को एकत्रित कर उन्हें उत्पादन में लगाने की आवश्यकता पड़ती है। यह काम व्यवस्थापक अथवा संगठनकर्त्ता करता है। अतः आज व्यवस्था अथवा संगठन उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। व्यवस्था को भी एक प्रकार का श्रम माना जाता है क्योंकि व्यवस्थापक या संगठनकर्त्ता भी उत्पादन में एक अच्छे किस्म का श्रम प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त हम देख चुके हैं कि आधुनिक उत्पादन प्रणाली में बहुत जोखिम है। अतः इस जोखिम को सहन करने के लिए व्यवस्था अथवा संगठन के अतिरिक्त साहसी की आवश्यकता पड़ती है। आजकल उत्पादन के साधन के रूप में साहस के महत्व को कम नहीं किया जा सकता।

उत्पादन तथा उपयोगिता सृजन के तरीके।

1. रूप उपयोगिता
2. स्थान उपयोगिता
3. समय उपयोगिता
4. स्वामित्व उपयोगिता
5. सेवा उपयोगिता
6. ज्ञान उपयोगिता

इस प्रकार उत्पादन के साधनों के सापेक्षिक महत्व के सम्बन्ध में कोई निश्चित निर्णय नहीं दिया जा सकता है। वास्तविकता तो यह है कि जिस प्रकार मनुष्य के शरीर के सभी अंग मानव जीवन के लिए आवश्यक होते हैं, उसी प्रकार उत्पादन में भी सभी साधनों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है।

© BSTBPC Not to be Published

II. वस्तुओं एवं सेवाओं का वर्गीकरण :

वस्तुएँ कई प्रकार की होती हैं और एक अर्थव्यवस्था में अनेक प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन होता है। इन वस्तुओं को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं।

(i) उपभोग की वस्तुएँ **(Consumer Goods)**

(ii) उत्पादक वस्तुएँ **(Producer Goods)**

उपभोग की वस्तुएँ वे हैं जिनका प्रत्यक्ष रूप से मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए उपयोग होता है। भोजन, वस्त्र, मकान, पुस्तक, कलम, रेडियो आदि उपभोग की वस्तुएँ हैं। ये वस्तुएँ भी दो प्रकार की होती है। (क) एकल प्रयोग की या गैर टिकाऊ वस्तुएँ तथा (ख) टिकाऊ वस्तुएँ। खाद्य एवं पेय पदार्थ इत्यादि उपभोग की गैर-टिकाऊ वस्तुएँ हैं जिनका हमारी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए केवल एक ही बार प्रयोग किया जा सकता है। इसके विपरीत रहने का मकान, साइकिल, टेलीविजन, घड़ी आदि टिकाऊ वस्तुएँ है, जिनका एक लंबे समय तक उपभोग होता है।

उत्पादक वस्तुएँ उन वस्तुओं को कहते हैं, जिनका अधिक उत्पादन अथवा आय प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की वस्तुएँ अर्थव्यवस्था की उत्पादन-क्षमता में वृद्धि करती है। उत्पादक वस्तुएँ भी गैर-टिकाऊ तथा टिकाऊ होती है। कच्चामाल, खाद, बीज इत्यादि गैर टिकाऊ उत्पादक वस्तुएँ कहलाती है। दूसरी ओर मशीन, यंत्र, उपकरण इत्यादि टिकाऊ उत्पादक वस्तुएँ हैं जो काफी समय तक उत्पादन-कार्य में सहायक होती है।

किशोर की कहानी

किशोर एक खेतिहर मजदूर है। अन्य ऐसे ही श्रमिकों की भाँति किशोर को अपनी मजदूरी से अपने घर-परिवार की आवश्यकताएँ पूरी करने में कठिनाई होती थी। कुछ वर्ष पहले किशोर ने बैंक से कर्ज लिया था। यह एक सरकारी कार्यक्रम के अंतर्गत था जिसमें भूमिहीन निर्धन परिवारों को सस्ते कर्ज दिए जा रहे थे। किशोर ने इस पैसे से एक भैंस खरीदी। अब वह भैंस का दूध बेचता है। अब उसने अपनी भैंसगाड़ी भी बना ली है जिससे वह कई प्रकार के सामान ले जाता है। सप्ताह में एक दिन वह गंगा के किनारे से कुम्हार के लिए मिट्टी लेकर आता है या कभी-कभी वह गुड़ तथा अन्य वस्तुओं को लेकर पास के मंडी जाता है। हरेक महीने उसे परिवहन संबंधित कोई न कोई काम मिल जाता है। परिणामस्वरूप किशोर पिछले वर्षों की तुलना में अब अधिक धन कमाने लगा है।

© BSTBPC Not to be Published

विभिन्न प्रकार के वस्तुओं का उत्पादन

(i) उपभोग की वस्तुएँ (Consumer goods)
- एकल प्रयोग की या गैर-टिकाऊ वस्तुएँ (Single used or non-durable goods)
- टिकाऊ वस्तुएँ (Durable goods)

(ii) उत्पादक वस्तुएँ (Producer goods)
- एकल प्रयोग की या गैर-टिकाऊ वस्तुएँ (Single used or non-durable goods)
- टिकाऊ वस्तुएँ (Durable goods)

© BSTBPC Not to be Published

सारांशः-

उत्पादन का अर्थ- अर्थशास्त्र में उत्पादन का अर्थ उपयोगिता का सृजन करना है।

उत्पादन के साधन- उत्पादन के पाँच साधन प्रमुख हैं जैसे-(i) भूमि, (ii) श्रम, (iii) पूँजी, (iv) व्यवस्था या संगठन और (v) साहस या उद्यम।

अर्थव्यवस्था में इन सभी उत्पादन के साधनों का समान महत्व है। किसी देश, राज्य, शहर या गाँव के वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय जीवन में उत्पादन का बहुत महत्व है।

गाँव में खेती मुख्य उत्पादन क्रिया है। पिछले वर्षों की तुलना में खेती की विधियों में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इसी वजह से किसान उतनी ही भूमि पर अब अधिक फसल पैदा करने लगे हैं। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है क्योंकि भूमि सीमित तथा दुर्लभ है। उत्पादन को बढ़ाने के लिए भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत अधिक दबाव पड़ा है।

खेती की नयी विधियों में कम भूमि परंतु अधिक पूँजी की जरूरत पड़ती है। मझोले और बड़े किसान अपने उत्पादन से हुई बचत से अगले मौसम के लिए पूँजी की व्यवस्था कर लेते हैं। दूसरी ओर छोटे किसानों के लिए, जो भारत में किसानों की कुल संख्या का 80 प्रतिशत भाग है, उन्हें पूँजी की व्यवस्था करने में बहुत कठिनाई होती है। उनके भूखंड का आकार छोटा होने के कारण उनका उत्पादन पर्याप्त नहीं होता। अतिरिक्त साधनों की कमी के कारण वे अपनी बचत से पूँजी नहीं निकाल पाते अत: उन्हें कर्ज लेना पड़ता है। कर्ज के अतिरिक्त कई छोटे किसानों को अपने व परिवार के भरण-पोषण के लिए खेतिहर मजदूर के रूप में अतिरिक्त काम करना पड़ता है।

श्रम पूर्ति, उत्पादन के अन्य कारकों की तुलना में अधिक प्रचुर है अत: नयी विधियों में श्रम का अधिक प्रयोग करना आदर्श होता, दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हुआ। खेती में श्रमिकों का उपयोग सीमित है। अवसरों की तलाश में श्रमिक आस-पड़ोस के गाँवों, शहरों तथा कस्बों में जा रहे हैं। कुछ श्रमिक, गाँव में ही गैर-कृषि क्षेत्र में काम करना प्रारंभ कर दिया है।

इस समय गाँव में गैर-कृषि क्षेत्रक बहुत बड़ा नहीं है। भारत में गाँव के 100 कामगारों में से केवल 24 ही गैर-कृषि कार्यों में लगे हैं। यद्यपि, गाँव में अनेक प्रकार के गैर-कृषि कार्य होते हैं। (हमने केवल कुछ ही उदाहरण देखें हैं), प्रत्येक कार्य में नियुक्त लोगों की संख्या बहुत ही कम है।

© BSTBPC Not to be Published

हम चाहेंगे कि भविष्य में गाँव में गैर-कृषि उत्पादन क्रियाओं में भी वृद्धि हो। खेती के विपरीत, गैर-कृषि कार्यों में कम भूमि की आवश्यकता होती है। लोग कम पूँजी से भी गैर-कृषि कार्य प्रारंभ कर सकते हैं। इस पूँजी को प्राप्त कैसे किया जाता है? या तो अपनी ही बचत का प्रयोग किया जाता है, या फिर कर्ज लिया जाता है। आवश्यकता है कि कर्ज ब्याज की कम दर पर उपलब्ध हो, ताकि बिना बचत वाले लोग भी गैर-कृषि कार्य शुरू कर सकें। गैर-कृषि कार्यों के प्रसार के लिए यह भी आवश्यक है कि ऐसे बाजार हो, जहाँ वस्तुएँ और सेवाएँ बेची जा सकें। फतेहपुर में हमने देखा कि आस-पड़ोस के गाँवों, कस्बों और शहरों में दूध, गुड़, गेहूँ आदि उपलब्ध हैं जैसे-जैसे ज्यादा गाँव कस्बों और शहरों से अच्छी सड़कों, परिवहन और टेलीफोन से जुड़ेंगे भविष्य में गाँवों में गैर-कृषि उत्पादन क्रियाओं के अवसर बढ़ेंगे।

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ) लिखें।

1. उत्पादन के प्रमुख साधन कितने हैं?

   (क) तीन (ख) चार
   (ग) पाँच (घ) दो

2. उत्पादन का अर्थ?

   (क) नयी वस्तु का सृजन (ख) उपयोगिता का सृजन
   (ग) उपयोगिता का नाश (घ) लाभदायक होना

3. उत्पादन का निष्क्रिय साधन है?

   (क) श्रम (ख) संगठन
   (ग) साहसी (घ) भूमि

4. निम्नलिखित में से भूमि की विशेषता कौन-सी है?

   (क) वह नाशवान है (ख) वह मनुष्य निर्मित है
   (ग) उसमें गतिशीलता का अभाव है (घ) उसमें समान उर्वरता है

5. अर्थशास्त्र में भूमि का तात्पर्य है?

   (क) प्रकृति प्रदत्त सभी निःशुल्क वस्तुएँ (ख) जमीन की ऊपरी सतह
   (ग) जमीन की निचली सतह (घ) केवल खनिज सम्पत्ति

6. निम्नलिखित में से कौन उत्पादक है?

   (क) बढ़ई (ख) भिखारी
   (ग) ठग (घ) शराबी

7. उत्पादन का साधन है?

   (क) वितरण (ख) श्रम
   (ग) विनिमय (घ) उपभोग

8. निम्नलिखित में कौन उत्पादन का साधन नहीं है?

   (क) संगठन (ख) उद्यम
   (ग) पूँजी (घ) उपभोग

© BSTBPC Not to be Published

9. **निम्नलिखित में से कौन पूँजी है?**

(क) फटा हुआ वस्त्र

(ख) बिना व्यवहार में लायी जानेवाली मशीन।

(ग) किसान का हल।

(घ) घर के बाहर पड़ा पत्थर।

10. **जो व्यक्ति व्यवसाय में जोखिम का वहन करता है, उसे कहते हैं?**

(क) व्यवस्थापक (ख) पूँजीपति

(ग) साहसी (घ) संचालक मंडल

11. **निम्नलिखित में कौन श्रम के अन्तर्गत आता है?**

(क) सिनेमा देखना

(ख) छात्र द्वारा मनोरंजन के लिए क्रिकेट खेलना

(ग) शिक्षक द्वारा अध्यापन

(घ) संगीत का अभ्यास आनन्द के लिए करना।

© BSTBPC Not to be Published

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. श्रम को उत्पादन का .... साधन कहा जाता है।
2. शिक्षक के कार्य को .... श्रम कहा जाता है।
3. .... अर्थव्यवस्था के भौतिक अथवा पूँजीगत साधन है।
4. सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य की .... बहुत बढ़ गई है।
5. वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन विभिन्न साधनों के .... से होता है।
6. उत्पादन की नयी तकनीक की वजह से उत्पादन क्षमता में अपेक्षाकृत .... होती है।

III. सही कथन में टिक (✓) तथा गलत कथन में क्रॉस (×) करें :

1. अर्थशास्त्र में उत्पादन का अर्थ उपयोगिता का सृजन करना है।
2. किसान के कार्य को मानसिक श्रम कहा जाता है।
3. अर्थशास्त्र के प्रमुख तत्व प्राकृतिक साधन एवं भौतिक साधन है।
4. ब्रिटेन की आर्थिक व्यवस्था विकसित है।
5. भारतीय अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था नहीं है।

IV. स्तंभ 'क' के कथन का स्तंभ 'ख' के कथन के साथ मिलान करें :

स्तंभ 'क'	स्तंभ 'ख'
1. भूमि का पारिश्रमिक	(क) लाभ
2. श्रम का पारिश्रमिक	(ख) वेतन
3. पूँजी का पारिश्रमिक	(ग) लगान
4. व्यवस्थापक का पारिश्रमिक	(घ) मजदूरी
5. साहसी का पारिश्रमिक	(ङ) ब्याज

V. लघु स्तरीय प्रश्न :

(उत्तर 20 शब्दों में दें)

1. उत्पादन से आप क्या समझते हैं?
2. उत्पादन तथा उपभोग में अन्तर कीजिए।
3. उत्पादन के विभिन्न साधन कौन-कौन से हैं?
4. फतेहपुर गाँव के लोगों का मुख्य पेशा क्या है?
5. भूमि तथा पूँजी में अन्तर करें।
6. क्या सिंचित क्षेत्र को बढ़ाना महत्वपूर्ण है? क्यों?
7. उत्पादन में पूँजी का क्या महत्व है?

VI. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

(उत्तर 100 शब्दों में दें)

1. उत्पादन की परिभाषा दीजिए। उत्पादन के कौन-कौन से साधन हैं? व्याख्या करें।
2. उत्पादन के साधनों में संगठन एवं साहसी की भूमिका का वर्णन करें।
3. फतेहपुर गाँव में कृषि कार्यों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।
4. मझोले एवं बड़े किसान कृषि से कैसे पूँजी प्राप्त करते हैं? वे छोटे किसानों से कैसे भिन्न हैं?

© BSTBPC Not to be Published

उत्तर

I. वस्तुनिष्ठ :

(1) ग, (2) ख, (3) घ, (4) क, (5) क, (6) क,
(7) ख, (8) घ, (9) ग, (10) ग, (11) ग।

II. रिक्त स्थान :

(1) सक्रिय, (2) मानसिक, (3) मशीन एवं यंत्र,
(4) आवश्यकताएँ, (5) सहयोग, (6) वृद्धि।

III. सही-गलत :

(1) सही, (2) गलत, (3) सही, (4) सही, (5) गलत।

IV. मिलान :

(1)-ग, (2)-घ, (3)-ङ, (4)-ख, (5)-क

© BSTBPC Not to be Published

परियोजना कार्य (Project Work) :

1. फतेहपुर गाँव में बिजली के प्रसार ने किसानों की किस तरह से मदद की है?
2. आप अपने गाँव या कस्बों के किन्हीं दो परिवारों के भूमि वितरण की एक सारणी बनाइए।
3. एक ही भूमि पर उत्पादन बढ़ाने के अलग-अलग कौन से तरीके हैं? समझाने के लिए उदाहरणों का प्रयोग कीजिए।
4. मझोले और बड़े किसान कृषि से कैसे पूँजी प्राप्त करते हैं? वे छोटे किसानों से कैसे भिन्न हैं?
5. सविता के किन शर्तों पर तेजपाल सिंह से ऋण मिला? क्या ब्याज की कम दर पर बैंक से कर्ज मिलने पर सविता की स्थिति अलग होती? बताएँ।
6. आप अपने गाँवों में और अधिक गैर-कृषि कार्य प्रारंभ करने के लिए क्या कर सकते हैं?

संदर्भ :

- N.C.E.R.T वर्ग IX अर्थशास्त्र ।
- हाई स्कूल अर्थशास्त्र – तेजप्रताप सिंह (भारती भवन)
- भारतीय अर्थव्यवस्था – भगवान प्रसाद सिंह
- योजना मासिक पत्रिका
- अर्थशास्त्र – डॉ० सुमन
- कुरुक्षेत्र – मासिक पत्रिका
- बिहार का आर्थिक सर्वेक्षण – 2006-07
- भारतीय अर्थव्यवस्था – रूद्र दत्त एवं के० पी० एम० सुन्दरम् ।

© BSTBPC Not to be Published